विरासत

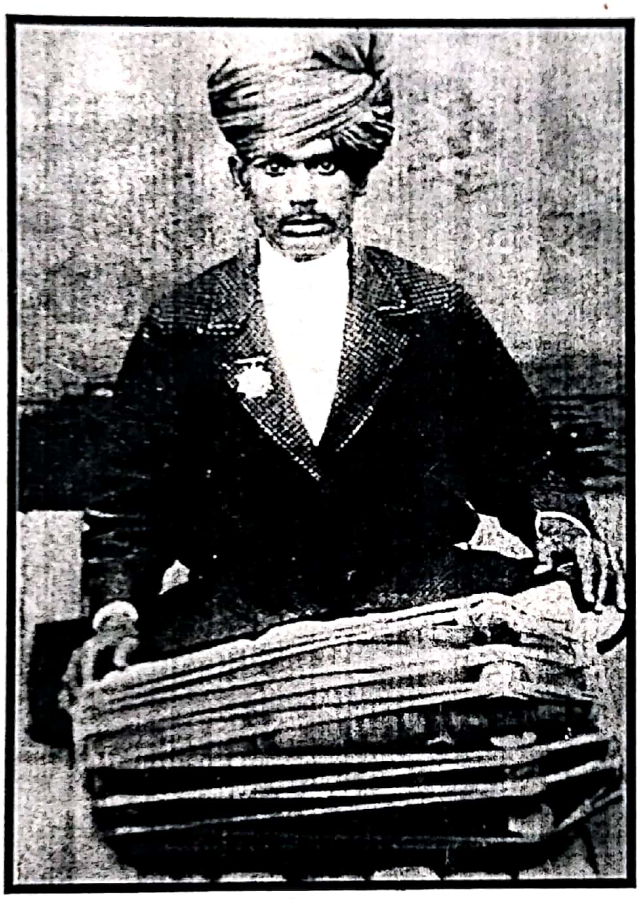

प्रकाशक-

प्रगतिशील लेखक संघ

टीकमगढ़ (म.प्र.)

स्व. श्री नजीम खाँ साहब की पावन स्मृति को सादर समर्पि
संस्मरण पत्रिका–

"विरासत"

संस्करण :
500 प्रतियाँ

प्रकाशन :
वसंतोत्सव एवं उस्ताद नजीम खाँ मृंदंगाचार्य 15 वाँ स्मृति संगीत समारोह
दिनांक 14 फरवरी 2006
स्थान : :टीकमगढ़ (म.प्र.)

प्रकाशक–
मुन्नालाल मिश्रा
अध्यक्ष
प्रगतिशील लेखक संघ
जिला–टीकमगढ़ (म.प्र.)

मुद्रक :
राजेश प्रिंटर्स एवं कम्प्यूटर्स ग्राफिक्स
हिमांचल की गली, टीकमगढ़ (म.प्र.)

स्थान : टीकमगढ़

Scanned with OKEN Scanner

संदेश

आदरणीय मिश्रा जी, हमें यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि आप
विरासत'' के प्रकाशन के साथ टीकमगढ़ रियासत की संगीत परम्परा
ो सहेज रहे हैं। श्री नजीम खां साहब टीकमगढ़ रियासत के मृदंगाचार्य थे
इसमें कोई शक नहीं है। उनकी स्मृति अमर हो। विरासत पत्रिका के
काशन पर प्रगतिशील लेखक संघ, इकाई टीकमगढ़ को मेरी ओर से
हुत-बहुत शुभकामनाऐं।

आभार !

उमाकाँत, रमाकाँत
''गुन्चेदा बंधु''
प्रोफेसर कालोनी, भोपाल

ति,

मुन्नालाल मिश्रा
सम्पादक
''विरासत''
टीकमगढ़ (म.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

संगीत विभूति : उस्ताद श्री नजीम खाँ साहब

लेखक : कपिलदेव तैलंग
तैलंग भवन, टीकमगढ़ (म.प्र.)

लम्बा छरहरा बदन, तन पर कलफ और बाहों पर चुनरदार सफेद मलमली ा, सिरपर कसावदार साफा और घुटने तक की धोती कभी लम्बी शेरवानी संग ाजामा मुखमण्डल पर गंभीरता, हृदय में विनम्रता, पूरे सलीकेदार व्यवहार– था बाहरी स्वरूप जिसके अंतर में एक बड़ा कलाकार विराजमान था। सौम्य, ा–सादापन, सबके प्रति स्नेह और अपनापन, ऐसे रहे उस्ताद नजीम खां साहब !

मुझे उनसे रूबरू होने का, मिलने का, उनकी, कला का प्रत्यक्ष देखने का सर मिलता रहा। ओरछा राज्य में एक संगीत विभाग भी था। मधुर कण्ठ के ी शास्त्रीय परम्परा के कुशल गायक श्री सीताराम जसौदी के एवं मान्नीय ताद नजीम खां साहब मृदंग और तबला वादन दोनों की जुगल जोड़ी सोने में गा का मुहावरा चरितार्थ कर देती थी।

वास्तव में तालवद्य गायन का गणित और व्याकरण माना जाता है, बिना वद्य के संगीत में प्राण संचार नहीं हो पाता, अतएव कहा गया है–

लें मृदंग पर जो पड़ती सही थी। वे थी सजीव स्वर सप्तक को बनाती।।

सात स्वरों के माध्यम से प्रस्तुत गायन तालवद्य से सजीव हो उठता है और न को सजीव बनाने की क्षमता और सामर्थ्य हमारे उस्ताद में विद्यमान रहा । छा दरबार में दशहरा हो या बसन्तोत्सव, होली या अन्य कोई समारोह बिना दो संगीतकारों के अधूरा ही रहता। बसन्त तथा होली के दरबार में महाराज सिंह की अगुवाई स्वागत करने हेतु जब श्री सीताराम जी का मधुर कण्ठ इन ावली में– **'वीर महेन्द्र सवाई, पधारहु नृपवर राई**

काफी राग में प्रस्तुत यह गायन जब कण्ठ से फूट उठता तो उस्ताद नजीम साहब की अंगुलियां और थाप तबले पर थिरक उठती। श्रोताओं को रस–राग ोर कर देती। यह था उनका तबले पर कमाल ।

उस्ताद मृदंग के लिये समर्पित रहे। कुदऊ सिंह घराने से प्रशिक्षित और र के सुप्रसिद्ध मृदंगवादक लाला झल्ली से प्रेरणा पाकर आपकी वादन–कला यार चांद लग गऐ । पाश्चात् ध्रुपद–धमार का प्राणपन सीमित रह जाने पर ताद ने तबला वादन को अपनाया। मुझे भी कुछ घुधला सा स्मरण है कि मैंने

Scanned with OKEN Scanner